भाषा की कक्षा में लेखन शैलियों और साहित्यिक विधाओं के प्रति सजगता

मनोज कुमार

उच्च प्राथमिक से उच्च माध्यमिक कक्षाओं में भाषा की पढ़ाई में विभिन्न साहित्यिक विधाओं और लेखन शैलियों का अध्यापन पारम्परिक सोच व तरीक़ों के वर्चस्व के चलते हमेशा चुनौतीपूर्ण रहा है। ये विधाएँ और शैलियाँ क्या हैं? इनके अध्यापन का उद्देश्य क्या है? इनकी विशेषताओं, सीमाओं, सम्भावनाओं और आपसी फ़र्क़ को कैसे पहचानें? और इनका सायास अध्यापन क्यों ज़रूरी है? ऐसे ही सवालों पर इस लेख में नए शोध और पाठ्यचर्या दस्तावेज़ के सुझावों को ध्यान में रखते हुए गहनता से विचार किया गया है।

इस समय भाषा शिक्षण की मुख्य चुनौती यह है कि विद्यार्थी प्राथमिक कक्षा में पढ़ना और लिखना सीख लें, तथा इस कौशल का उपयोग कर आगामी कक्षाओं में सीखने और पेशेवर जीवन में स्वावलम्बी बन सकें। शिक्षा के दायरे में इस समय चल रहे कई महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम इस लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में अग्रसर हैं। सम्भवत: इस बड़ी चुनौती के चलते इस बात पर बहुत चर्चा नहीं हो रही है कि जब एक बार विद्यार्थी विद्यालय की भाषा में पढ़ना-लिखना सीख लेते हैं तब उसके बाद आगे की कक्षाओं में भाषा शिक्षण से वे क्या हासिल करना चाहते हैं।

फ़र्ज़ करें कि छठवीं कक्षा के एक विद्यार्थी ने अर्थ समझकर किसी पाठ को पढ़ने में महारत हासिल कर ली है, और अब उसे अपनी कक्षा की पाठ्यपुस्तक में प्रेमचंद की कहानी पढ़ना है। क्या कहानी पढ़ने के लिए इस विद्यार्थी को किसी शिक्षक की ज़रूरत है? यदि वह कहानी को स्वतंत्र रूप से पढ़कर समझ लेता है तब कक्षा में उसे पढ़ाए जाने का उसके लिए क्या महत्त्व है? और यदि मान लें कि कक्षा में सभी विद्यार्थी पाठ्यचर्या की अपेक्षा के अनुरूप स्वतंत्र रूप से पढ़कर समझ लेते हैं, तब उस कक्षा का समय कहानी के अध्यापन पर क्यों ख़र्च किया जाए।

इन प्रश्नों के कई उत्तर हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, कहानी पढ़ना विद्यार्थियों को रुचिकर लगता है, और रुचिकर सामग्री पढ़ने से उनमें पढ़ने की आदत विकसित होती है। इतना ही नहीं, शायद ही कहीं छठवीं कक्षा ऐसी हो जिसमें सभी विद्यार्थी

चित्र 1: पढ़ना और समझना सीख लेने के बाद विद्यार्थियों की रुचि तरह-तरह के पाठों में जागती है

चित्र 2 : उच्च प्राथमिक के विद्यार्थियों को सही पुस्तक का चयन करने में मार्गदर्शन की ज़रूरत होती है

> भाषा शिक्षण का एक उद्देश्य कविता, कहानी, निबन्ध, आदि जैसी साहित्यिक विधाओं और कथात्मक, वर्णनात्मक, आदि जैसी लेखन शैलियों को पहचानने और सराहने के कौशल के बारे में है।

अर्थ समझकर अपने-आप पाठ को धाराप्रवाह पढ़ लें। वे अकसर अटक-अटक कर पढ़ते हैं। ऐसी स्थिति में, कक्षा में कहानी पढ़ने के अवसर देने से वे धीरे-धीरे धाराप्रवाह पढ़ना सीख जाते हैं। दूसरा सम्भव जवाब हो सकता है कि कहानी पढ़ने और सुनने से विद्यार्थियों को सफल और नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। प्रायः इन कहानियों में हम देखते हैं कि बुरे कर्मों का नतीजा बुरा और अच्छे कर्मों का नतीजा अच्छा होता है। हम इन कहानियों में पाते हैं कि चाहे जीवन में जितनी भी मुश्किलें हों, कोशिश करके जीवन में सब कुछ हासिल किया जा सकता है। इन उत्तरों के विपरीत, तर्क किया जा सकता है कि यदि उद्देश्य पढ़ने की आदत विकसित करना या धाराप्रवाह पढ़ना सीखना है तब कक्षा में कहानियों पर चर्चा से बेहतर यही होगा कि विद्यार्थियों को पुस्तकालय से किताब लेकर स्वतंत्र ढंग से पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाए।

दूसरी बात, आधुनिक कहानियाँ पारम्परिक बोध कथाओं से भिन्न होती हैं, और पारम्परिक अर्थ में प्रेरणादायक भी नहीं हैं। एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित आठवीं कक्षा की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक *मल्हार* में भीष्म साहनी द्वारा लिखित एक कहानी है 'दो गौरैया'। कहानी रोज़मर्रा के जीवन में आई एक मामूली-सी उलझन को लेकर है। दो गौरैया एक दिन कहीं से आकर छत से लटक रहे पंखों के डैनों के बीच घोंसला बना लेती हैं, और पिताजी की तमाम कोशिशों के बाद भी वह घर से निकलती नहीं। ऐसा नहीं है कि इस कहानी में कोई नैतिक उलझन नहीं है, या कोई नैतिक सन्देश नहीं है। कहानी से एक से अधिक सन्देश निकाले जा सकते हैं, उन पर बहस हो सकती है, लेकिन नैतिक उलझन और द्वन्द्व समाप्त होकर नैतिक समाधान तक पहुँचने में कोई हड़बड़ी नहीं है। इस दृष्टि से इस कहानी का ढाँचा *पंचतंत्र* की कहानियों और दूसरी पारम्परिक बोध कथाओं से अलग है। यह एक उदाहरण है। इसी प्रकार की कई अन्य कहानियाँ छठवीं, सातवीं और आठवीं की पाठ्यपुस्तकों में हैं। यह मानने का कोई कारण नहीं है कि इन कहानियों को नैतिक शिक्षा देने या धाराप्रवाह पढ़ने की पाठ्य सामग्री के रूप में रखा गया है। शायद पाठ्यपुस्तकों में इस प्रकार की कहानियों के चयन के पीछे कई अन्य प्रयोजन होंगे।

साहित्यिक विधाओं और शैलियों की संरचनात्मक विशिष्टताओं की पहचान

पाँचवीं से आठवीं कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न साहित्यिक विधाओं और विषयवस्तुओं की रचनाओं को संकलित करने के उद्देश्यों का कुछ अनुमान इनकी भूमिकाओं में उल्लिखित पाठ की संरचना को देखकर मिलता है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2023* में वर्णित पाठ्यचर्या उद्देश्यों की सूची को देखने से भी इस चयन का तर्क समझ में आता है। इस सूची में भाषा शिक्षण का एक उद्देश्य कविता, कहानी, निबन्ध, आदि जैसी साहित्यिक विधा और कथात्मक, वर्णनात्मक, आदि जैसी लेखन शैलियों को पहचानने और सराहने के कौशल के बारे में है। इन्हें अलग-अलग पहचानने का अर्थ है—इनकी विशेषताओं, सम्भावनाओं और सीमाओं को भी पहचानना। उदाहरण के तौर पर, कहानी में ऐसा क्या कहा जा सकता है, जिसे एकांकी अथवा नाटक में नहीं कहा जा सकता, या एकांकी अथवा नाटक में किस प्रकार की अभिव्यक्तियाँ सम्भव हैं जो कहानियों में नहीं हैं। परम्परागत लोककथाओं से प्रेमचंद जैसे लेखकों की कहानियाँ किन अर्थों में समानता और भिन्नता लिए हैं? विधाओं की विशेषताओं को पहचानने का आशय सिर्फ़ इन विधाओं में आमतौर पर अभिव्यक्त विषयवस्तुओं की प्रकृति को रेखांकित करना नहीं है। हालाँकि विषयवस्तुओं की विशिष्टता भी महत्त्वपूर्ण है, लेकिन विधाओं की संरचनात्मक विशिष्टताओं को भी समझना और समझाना ज़रूरी है। विधागत संरचना का अर्थ यह है कि किसी विधा विशेष में लिखी गई रचना के हिस्से किस क्रम में आते हैं, और हर हिस्सा क्या काम करता है। उदाहरण के लिए, कहानी में हम किसी व्यक्ति या कुछ लोगों के जीवन में घटी

कुछ घटनाओं के बारे में बताते हैं, और संस्मरण में भी कुछ ऐसा ही करते हैं। कहानी के पहले हिस्से में पात्र और परिवेश के बारे में कुछ ब्योरे होते हैं, उसके अगले हिस्से में उन पात्रों के जीवन में कुछ बाधाएँ आती हैं, फिर पात्र उन बाधाओं से जूझते हुए या तो अपना उद्देश्य हासिल कर लेते हैं, या फिर हार जाते हैं। हार जाने की स्थिति में त्रासद, दुःखद अन्त वाली कहानी सामने आती है, और जीत जाने की स्थिति में सुखद अन्त वाली।

एनसीईआरटी द्वारा छठवीं कक्षा के लिए प्रकाशित हिन्दी की पाठ्यपुस्तक *मल्हार* की दो रचनाओं को अगर हम साथ-साथ पढ़ें, और उनकी संरचनाओं की तुलना करें तो विद्यार्थी विधागत संरचना की समझ पुख़्ता कर सकते हैं। पहली रचना है सुदर्शन की कहानी 'हार की जीत' और दूसरी रचना है मेजर ध्यानचंद का संस्मरण 'गोल'।

विधागत विशिष्टताओं का अध्यापन : सायास या अनायास

हाल में एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित माध्यमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में विधागत विशिष्टताओं की तरफ़ ध्यान दिलाने के कुछ अवसर दिए गए हैं। सभी पाठों के अन्त में अभ्यास की सूची में 'कहानी की रचना' जैसे कुछ अभ्यास दिए गए हैं। इन प्रश्नों के ज़रिए कहानी लेखन के रचनात्मक पहलुओं की ओर ध्यान दिलाया गया है। विधागत विशिष्टताओं का बोध करवाना माध्यमिक स्तर के कई उद्देश्यों में से एक है। पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों का दृष्टिकोण यह भी है कि विधाओं की विशिष्टताओं को विद्यार्थी रचना से गुज़रते हुए पहले अकेले और बाद में समूह में खोजें। पाठ्यपुस्तकें और पाठ्यचर्या, पीढ़ियों से संचित विधा सम्बन्धी ज्ञान को सायास तरीक़े से सुपुर्द करने के पक्ष में नहीं हैं। विद्यार्थियों को साहित्यिक रूपों व विधाओं से रू-ब-रू करवाना और यह मान लेना कि वे स्वयं ही विभिन्न रूपों और विधाओं की विशिष्टताओं को पहचान लेंगे, एक बात है; जबकि रूपों और विधाओं को सुनियोजित शिक्षण गतिविधियों के माध्यम से समझाना, दूसरी बात है। माध्यमिक स्तर के लिए हाल में प्रकाशित एनसीईआरटी की हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकें पहले दृष्टिकोण को अपनाती हैं। यह इस बात से स्पष्ट होता है कि अभ्यास खण्ड में विधाओं और रूपों से सम्बन्धित प्रश्न पहले दृष्टिकोण से तैयार किए गए हैं।

मल्हार की भूमिका में रचना सम्बन्धी प्रश्नों के बारे में यह कहा गया है : "साहित्य की रचना—इस प्रश्न द्वारा विद्यार्थियों को साहित्य की विधा-विशेष की विशेषताओं और संरचनात्मक पहलुओं की ओर ध्यान देने का अवसर मिलेगा।" (पृष्ठ ix) इस सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि वर्तमान शैक्षिक विमर्श में

चित्र 3 : साहित्य की विविध विधाओं की अपनी-अपनी ख़ूबियाँ होती हैं, विद्यार्थी को इन्हीं ख़ूबियों और विशिष्टताओं को पकड़ना पड़ता है

शिक्षाविदों का एक वर्ग ऐसा है जो कहानी सहित साहित्य के सभी रूपों और लेखन की विविध विधाओं के सायास अध्यापन को ज़रूरी मानता है।

विद्यालयी शिक्षा में विद्यार्थी जैसे-जैसे आगे बढ़ता है, उसे विभिन्न प्रकार की लेखन विधाओं को सीखना पड़ता है। इन विधाओं से परिचय, पढ़ने और लिखने में उसकी मदद करता है। दुर्भाग्य से, विद्यालयों में एक या दो प्रकार के लेखन पर ही ज़ोर होता है। उदाहरण के लिए, अपने पूर्व अनुभव को स्मृति के आधार पर दर्ज करना, टिप्पणी करना, या किसी अवलोकन के आधार पर कुछ लिखना। जैसे भाषा की कक्षा में विद्यार्थियों से पूछा जाता है कि आप पिछली गर्मियों की छुट्टी में किसी रिश्तेदार के यहाँ या कहीं घूमने गए होंगे, उस अनुभव पर एक निबन्ध लिखें। अथवा विद्यार्थियों को विद्यालय परिसर में कुछ देर बाहर घूमने की अनुमति दी जाती है, और लौटकर, वे जो बाहर देखते हैं, उन्हें अपनी नोटबुक में दर्ज करने को कहा जाता है। ये गतिविधियाँ निरर्थक अथवा अनावश्यक नहीं हैं, लेकिन यदि लेखन विधा के अनुसार देखें तो हम विद्यार्थियों को केवल स्मृति- और अवलोकन-आधारित विवरणों को लेखन के ज़रिए दर्ज करने का अवसर दे रहे हैं। इनके अलावा, यदि विद्यालय में अन्य ज़रूरी विधाओं और लेखन शैलियों को सायास नहीं पढ़ाया जाता है तो ख़ासतौर पर वे विद्यार्थी पीछे छूट जाते हैं जिनके परिवार और पड़ोस में पढ़ने-लिखने की संस्कृति और सुविधा कम है। इसलिए सिडनी स्कूल ने समावेशी शिक्षा के तर्क के साथ विधाओं के सायास अध्यापन पर ज़ोर दिया। इन्हीं तर्कों के साथ हम साहित्य की विविध विधाओं के सायास अध्यापन की आवश्यकता को भी समझ सकते हैं।

विधाओं के सायास अध्यापन का अर्थ है—सचेत रूप से विद्यार्थियों का अलग-अलग प्रकार की रचना विधाओं से परिचय करवाना और उनमें महारत हासिल करने में सहयोग करना। इतिहास, विज्ञान, आदि अलग विषयों में अलग-अलग रचना विधाओं और लेखन शैलियों का प्रयोग होता है। उदाहरणार्थ, विज्ञान में परिभाषा, उदाहरण, वर्गीकरण, कार्य-कारण सम्बन्ध, किसी प्रक्रिया का विवरण जैसी रचना विधाओं का अधिक इस्तेमाल होता है, जबकि इतिहास में तथ्यों और घटनाओं का कालक्रमिक विवरण, एक से अधिक प्रमाणों का मिलान करके तथ्यों की पुष्टि, कार्य-कारण सम्बन्ध जैसी रचना विधाओं का। अगर विद्यार्थियों को माध्यमिक, उच्च माध्यमिक और आगे की कक्षा में सफल होना है तो उन्हें इन तमाम लेखन प्रविधियों में दक्षता हासिल करने के अवसर मिलने चाहिए।

अगर हम विधाओं के सायास अध्यापन पर विचार करें तो साहित्यिक विधाओं पर कक्षा में बातचीत से इसकी शुरुआत होगी। लेकिन साहित्य से इतर भी प्रारम्भिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक की भाषा की कक्षाओं में इस पर काम करने की ज़रूरत होगी। उदाहरण के लिए, किसी प्रक्रिया का वर्णन करने वाले पाठ में भाषा के किन पक्षों पर ध्यान देने की ज़रूरत है; अगर हम किसी घटना का विवरण दे रहे हैं तो पाठ के भीतर अलग-अलग हिस्सों को किस प्रकार एक दूसरे से सम्बद्ध करें; किसी ऐसे विषय पर समीक्षात्मक लेख लिखना हो जिस पर अलग-अलग विद्वानों के बीच एक से अधिक राय हों तो पाठ को कैसे संयोजित करें; इत्यादि विषय भाषा के अध्यापन के विषय हो सकते हैं।

> **अधिसंज्ञानात्मक का अर्थ होता है संज्ञान का संज्ञान लेना। अकसर हम किसी वस्तु या विषय का संज्ञान लेते हैं। जब संज्ञान ख़ुद ही संज्ञान का विषय बन जाए तो वह अधिसंज्ञानात्मक अवस्था है।**

साहित्यिक और ग़ैर-साहित्यिक लेखन की अलग-अलग विधाओं के ज्ञान से किसी रचना को पढ़ने में सहूलियत होती है। विद्यार्थी जब किसी संस्मरण को पढ़ने बैठते हैं तो उस विधा के हिसाब से अपनी अपेक्षाओं का तालमेल बिठाकर बैठते हैं। उन्हें पता होता है कि संस्मरण से उन्हें वे अपेक्षाएँ नहीं रखनी चाहिए जो वे कहानी से रख सकते हैं। उसी प्रकार, किसी साहित्यिक कहानी से उन्हें वह अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए जो वे इतिहास लेखन से करते हैं, भले ही वह कहानी किसी ऐतिहासिक घटना या पात्र पर ही क्यों न हो।

यह तो पढ़ने की बात हुई। अगर लिखने की बात करें तो विद्यार्थियों को यह पता होना चाहिए कि संस्मरणात्मक लेखन में उनको अपने व्यक्तित्व को प्रकट करने की छूट है, लेकिन एक सर्वेक्षणकर्ता के रूप में उन्हें अपने बारे में कम और अपने विषय के बारे में अधिक बात करनी चाहिए। प्रारम्भिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक कक्षाओं में अकादमिक सफलता के लिए इस प्रकार का अभ्यास ज़रूरी है।

विधागत विशिष्टताओं की पहचान

विधाओं को सायास तरीक़े से पढ़ाने के पीछे एक अन्य तर्क भी है। वह यह है कि लेखन पद्धतियों और विधाओं की ओर सायास ध्यान देने से अधिसंज्ञानात्मक (metacognitive) और अधिभाषिक (metalinguistic) क्षमताओं का विकास होता है। अधिसंज्ञानात्मक का अर्थ होता है संज्ञान का संज्ञान लेना। अकसर हम किसी वस्तु या विषय का संज्ञान लेते हैं। जब संज्ञान ख़ुद ही संज्ञान का विषय बन जाए तो वह अधिसंज्ञानात्मक अवस्था है। वैसे ही अधिभाषिक का मतलब होता है भाषा में किसी और विषय के बारे में नहीं, बल्कि भाषा के बारे में ही बात करना। वायगोत्स्की की धारा में शिक्षा और विशेष रूप से भाषा की शिक्षा पर सोचने वाले विद्वान कहते हैं कि भाषा एक शीशे की खिड़की की तरह है जिससे हम दुनिया को देखते और उसका संज्ञान लेते हैं। लेकिन पीछे मुड़कर जब हम शीशे का संज्ञान लेते हैं तो हम संज्ञान के दूसरे स्तर पर पहुँचते हैं। यह अधिसंज्ञानात्मक अवस्था है। भाषा के क्षेत्र में बात करें तो यह अधिभाषिक अवस्था

है। जब हम पलटकर खिड़की के शीशे पर नज़र डालते हैं, हमें कई बार दिखता है कि शीशा पूरी तरह पारदर्शी और रंगहीन नहीं है। बाहर जिस रंग की दुनिया दिख रही है उस यथार्थ को गढ़ने में शीशे के रंग की भी भूमिका होती है। उसी प्रकार पाठ में वर्णित किसी चरित्र या घटना का अर्थ इस पर भी निर्भर करता है कि हम उसे किस विधा में रचते हैं।

शुरुआती और प्रारम्भिक स्तर से विद्यार्थी जब माध्यमिक और उच्च माध्यमिक की ओर बढ़ते हैं, तो पाठ्यक्रम की अपेक्षाएँ पठन-पाठन और चिन्तन-मनन की दृष्टि से संज्ञानात्मक के साथ-साथ अधिसंज्ञानात्मक स्तर को हासिल करने की होती हैं। ऐसा सभी विषयों में होता है। गणित में हम अंकगणित से बीजगणित की ओर बढ़ते हैं। विज्ञान में भी अधिक अमूर्त धारणाओं से विद्यार्थी रू-ब-रू होते हैं। इसी क्रम में भाषा के अध्ययन-अध्यापन में हमें संज्ञानात्मक के साथ-साथ अधिसंज्ञानात्मक और अधिभाषिक स्तर पर बढ़ने की ज़रूरत होती है। इस प्रयास में साहित्यिक विधाओं और लेखन पद्धतियों का सायास अध्ययन ज़रूरी है।

“भाषा के अध्ययन–अध्यापन में संज्ञानात्मक के साथ–साथ अधिसंज्ञानात्मक और अधिभाषिक स्तर पर बढ़ने की ज़रूरत होती है। इस प्रयास में साहित्यिक विधाओं और लेखन पद्धतियों का सायास अध्ययन ज़रूरी है।”

सन्दर्भ

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2023, पृष्ठ संख्या 241–248, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

मनोज कुमार अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी के शिक्षा संकाय में अध्यापक हैं। दिगंतर जयपुर, रूम-टू-रीड इंडिया जैसी संस्थाओं के साथ काम करते हुए प्रारम्भिक शिक्षा में ज़मीनी स्तर पर काम किया है। शिक्षा, साहित्य, संस्कृति और समसामयिक मसलों पर इनकी कई रचनाएँ हिन्दी और अँग्रेज़ी में प्रकाशित हुई हैं। बच्चों के लिए भी रचनाएँ पत्रिकाओं में या पिक्चर बुक्स के रूप में प्रकाशित हुई हैं।

सम्पर्क : manoj.kumar@azimpremjifoundation.org